❍ 03 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *किसी देहधारी के जाल में तो नहीं फंसे ?*

➢➢ *भिन्न भिन्न युक्तियों से सर्विस की ?*

➢➢ *अनेक प्रकार के भावों को समाप्त कर आत्मिक भाव धारण किया ?*

➢➢ *उमन उत्साह के पंखो से सहज सफलता प्राप्त की ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जब विशेष याद में बैठते हो तो अपने कोई न कोई श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर बैठो।* कभी 'मास्टर बीजरूप' की स्थिति के आसन पर, कभी 'अव्यक्त फरिश्ते' की सीट पर कभी 'विश्व-कल्याणकारी स्थिति' की सीट पर सेट हो जाओ, ऐसे *हर रोज भिन्न-भिन्न स्थिति के आसन पर व सीट पर सेट होकर बैठो तो शक्तिशाली याद का अनुभव करेंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को सदा संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा अनुभव करते हो? *श्रेष्ठ ब्राह्मण अर्थात् जिन्हों का हर संकल्प, हर सेकण्ड श्रेष्ठ हो। ऐसे श्रेष्ठ बने हो कि कभी साधारण, कभी श्रेष्ठ? अभी साधारण और श्रेष्ठ दोनों चलते हैं या सिर्फ श्रेष्ठ चलते हैं? क्या होता है? थोड़ा-थोड़ा चलता है? तो सदैव मैं ऊंचे से ऊंची श्रेष्ठ ब्रह्मण आत्मा हूँ-यह स्मृति इमर्ज रखो।*

〰✧ देखो, जो आजकल के नामधारी ब्राह्मण हैं, उन ब्राह्मणों से भी कौन-सा कार्य कराते हैं? जहाँ कोई श्रेष्ठ कार्य होगा तो ब्राह्मणों को बुलाते हैं। तो यह आप लोगों के यादगार हैं ना। क्योंकि आप श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने सदा श्रेष्ठ कार्य किया है, तभी अब तक भी यादगार में ब्राह्मण श्रेष्ठ कार्य के निमित्त हैं। अगर कोई ब्रह्मण ऐसा कोई काम कर लेता है तो उसको कहते हैं यह ब्राह्मण नहीं है। *तो ब्राह्मण अर्थात श्रेष्ठ कार्य करने वाले, श्रेष्ठ सोचने वाले, श्रेष्ठ बोलने वाले। तो जैसा कुल होता है वैसे कुल के प्रमाण कर्तव्य होता है। अगर कोई श्रेष्ठ कुल वाला ऐसा-वैसा काम करे तो उसको शर्मवाते हैं कि ये क्या करते हो!*

〰✧ तो अपने आपसे पूछो कि मैं ब्राह्मण ऊंचे से ऊंची आत्मा हूँ, श्रेष्ठ आत्मा हूँ तो कोई भी ऐसा कार्य कर कैसे सकते। क्योंकि श्रेष्ठ कर्म का आधार है श्रेष्ठ स्मृति। स्मृति श्रेष्ठ है तो कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ होंगे। तो सदा यह श्रेष्ठ स्मति रखो कि हम श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं। यह तो सदा याद रहता है या याद करना

पड़ता है? कभी शरीर को याद करते हो कि मैं फलाना हूँ, मैं फलानी हूँ? क्योंकि याद तब किया जाता है जब भूलते हैं। अगर कोई बात भूली नहीं तो याद करनी पड़ेगी। *तो मैं ब्राह्मण आत्मा हूँ यह भी स्वत: याद रहे, न कि करना पड़े। तो स्वत: और सदा याद रहे कि 'मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ'। जब तक ब्राह्मण जीवन है तब तक ये स्वत: याद रहे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *कर्मयोगी स्थिति अति प्यारी और न्यारी है।* इससे कोई कितना भी बडा कार्य हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे *काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं।* चाहे कितना भी मेहनत का, सखा खेल हो, फिर भी खेल में मजा आयेगा ना।

〰✧ जब मल्लयुद्ध करते हैं तो कितनी मेहनत करते हैं। लेकिन जब *खेल समझकर करते हैं तो हँसतेहँसते करते हैं।* मेहनत नहीं लगती, मनोरंजन लगता है।

〰✧ तो कर्मयोगी के लिए कैसा भी कार्य हो लेकिन मनोरंजन है, *संकल्प में भी मुश्किल का अनुभव नहीं होगा।* तो कर्मयोगी ग्रुप अपने कर्म से अनेकों के

कर्म श्रेष्ठ बनाने वाले, इसी में बिजी रही। कर्म और याद कम्बाइन्ड, अलग हो नहीं सकते।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ ओरिजिनल अभ्यास आत्मा को न्यारा होने में हैं। न्यारी थी, न्यारी हैं, फिर न्यारी बनेगी। *सिर्फ अटैचमेंट न्यारा बनने नहीं देता है।* वैसे आत्मा की ओरीजनल नेचर शरीर से न्यारे रहने की है, अलग है। शरीर आत्मा नहीं, आत्मा शरीर नही। तो न्यारे हुए ना। *सिर्फ 63 जन्मों से अटैचमेंट की आदत पड़ गई है। ओरीजनल तो ओरीजनल ही होता है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- शरीर का कोई भरोसा नही,इसलिए जो भी शुभ कार्य आज ही करना"*

➳ _ ➳ खुबसूरत मौसम का आनंद लेती हुई मै आत्मा... आत्म चिंतन और अपने प्यारे दिलबर बाबा की यादो में झूम रही हूँ... कि *मीठा बाबा गर न मिला होता... तो यह जीवन कितना खोखला और निर्रथक होता*... मीठे बाबा ने मेरे दिल पर अपनी प्यार भरी दस्तक देकर... मेरे जीवन में आनंद की फुहारे बिखेरी है... और साधारण जीवन को असाधारण बनाकर, मुझ आत्मा को बहुमूल्य सा बना दिया है... *ईश्वरीय हाथो में मेरा देवताई सौंदर्यकरण हो रहा है... शरीर के मरने से पहले मै आत्मा... देवताई अमरता से सज संवर गयी हूँ..*. अपने मीठे मनमीत को अपने दिल की बात सुनाने.... मै आत्मा वतन में पहुंचती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को संगम के वरदानी समय का महत्व समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वरीय यादो से भरा यह खुबसूरत समय आपके सम्मुख है... *संगम में वरदानों से, शक्तियो से सज संवर कर, देवताई सौंदर्य से दमक उठो*... अपनी हर साँस को ईश्वरीय याद में सफल कर... उज्ज्वल भविष्य को पाओ... शरीर के छूटने से पहले, ईश्वरीय ज्ञान और याद से लबालब हो जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के अथाह प्यार को अपने आँचल में समेट कर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा... मै आत्मा आपको पाकर महान भाग्य से सज गयी हूँ... *आपके मिलन के खुबसूरत समय में अपने जीवन को... नये आयामो से सजा रही हूँ.*..हर संकल्प से आपकी मीठी यादो में खोयी हुई, शुभ कार्य में मगन हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अमूल्य ज्ञान धन से सजाकर, शरीर की नश्वरता का अहसास दिलाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय खजानो से समय रहते... स्वयं को भरपूर करके, सदा की अमीरी से सम्पन्न होकर, देवताई सुखो में मुस्कराओ... *देह के खत्म होने से पहले समय को शुभ कार्यो से सजा लो... जो करना है, वह आज ही सम्पन्न कर लो...कल का कोई भरोसा नही*..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की श्रीमत को दिल से अपनाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *इस जनम में आपको पाकर, किस कदर महान भाग्य की धनी हो गयी हूँ.*.. कभी सोचा भी न था, मीठे बाबा की यह अंतिम जनम... ईश्वर पिता को पाने वाला, इस कदर खूबसूरती से सज जायेगा... मै आत्मा हर साँस से आपकी मीठी यादो में डूबी हुई हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को देवताई शानो शौकत से सजाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे.... भगवान धरती पर आप बच्चों के खुबसूरत जीवन की खातिर ही तो उतर आया है... इसलिए *ईश्वरीय साथ और हाथ लिए यह कीमती समय ईश्वरीय प्यार में लुटा दो*... यह अंतिम जीवन नष्ट होने से पहले सांसो को... शिव पिता के नाम कर, सदा के देवताई सुखो को अपनी तकदीर में भर लो...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा को अपनी हर साँस में पिरोकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा *कितनी सोभाग्यशाली हूँ कि इस अंतिम जनम में भगवान को पा गयी हूँ... मेरी हर साँस और संकल्प आपके नाम है.*.. आपकी मीठी यादो से महकता यह खुशनुमा जीवन है... इस शरीर के खत्म होने से पहले... मै अथाह खजाने पाने वाली दौलतमंद हो गयी हूँ..."मीठे बाबा को अपने दिल के उदगार अर्पित कर मै आत्मा... देह की दुनिया में अपने सिहांसन पर लौट आयी...

———————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप की याद से माया की जाल से निकलना है*"

➳ _ ➳ एक खुले एकांत स्थान पर बैठ मैं इस रावण राज्य, माया नगरी में होने वाली गतिविधियों के बारे में विचार कर रही हूँ। विचार करते - करते इस मायानगरी के अनेक दृश्य मेरी आंखों के सामने उभरने लगते हैं। *मैं देख रही हूँ माया की इस दुनिया मे मन को आकर्षित करने वाले विनाशी सुख के साधन, भौतिक सुख सुविधाएं और ऐशो आराम की वस्तुएँ, जिन्हें पाकर मनुष्य बहुत खुश दिखाई दे रहें हैं*।

➳ _ ➳ इसी माया नगरी में, इन सभी सुख साधनों के बीच अब मैं स्वयं को देख रही हूँ। इन वस्तुयों का आकर्षण मुझे भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। *मैं जैसे ही आकर्षित हो कर उन वस्तुओं का सुख लेने के लिए उनके पास जाती हूँ अपने आप को एक जाल में फंसा हुआ महसूस करती हूँ*। उन सुख सुविधायों का प्रयोग करने वाला हर मनुष्य मुझे एक जाल में फंसा हुआ दिखाई दे रहा है। सभी उस जाल से निकलने का पूरा प्रयास कर रहें हैं। किंतु उनका हर प्रयास विफल हो रहा है।

➳ _ ➳ स्वयं को उस जाल से मुक्त करने के लिए मैं जैसे ही अपने हाथ - पैर चलाती हूँ, अनुभव करती हूँ कि जाल और उलझता जा रहा है। थक कर मैं शांन्त हो कर जैसे ही बैठती हूँ कानों में अव्यक्त बापदादा की आवाज सुनाई देती है, बच्चे:- अशरीरी हो कर बाप की याद में बैठ जाओ"। *हलचल की उस परिस्थिति में अब मैं अपने मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ और सभी बातों से ध्यान हटा कर स्वयं को जैसे ही अशरीरी स्थिति में स्थित करती हूँ वैसे ही अपने निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप को धारण कर उस जाल से स्वयं को मुक्त कर लेती हूँ*।

➳ _ ➳ निर्बन्धन हो कर अब मैं आत्मा ऊपर की और उड़ रही हूँ। हर प्रकार के बंधन से मुक्त इस स्थिति में मैं स्वयं को एक दम हल्का अनुभव कर रही हूँ। यह हल्का पन मन को आनन्दित कर रहा है। *एक आजाद पक्षी की भांति ऊंची उड़ान भर, मैं प्रकृति के सुंदर नजारो का आनन्द लेती हुई ऊपर ही ऊपर उड़ती जा रही हूँ*। उड़ते - उड़ते मैं आकाश को भी पार कर, फरिश्तो की दुनिया से होती हुई लाल प्रकाश की एक अति सुंदर दुनिया मे प्रवेश करती हूँ। *चमकते हुए चैतन्य सितारों की यह निराकारी दुनिया मेरे पिता परमात्मा का घर है*। अपने इस घर मे अब मैं स्वयं को अपने निराकार शिव पिता के सामने देख रही हूँ।

➳ _ ➳ अपने निराकार शिव पिता परमात्मा की सर्वशक्तियों की छत्रछाया के नीचे बैठ मैं गहन शांति, आनन्द की अनुभूति कर रही हूँ। गहन अतीन्द्रिय सुख में डूबती जा रही हूँ। *माया के जाल में फंस कर दुखी होने की सारी पीड़ा मेरे शिव पिता के स्नेह की शीतल छाया पा कर जैसे समाप्त हो गई है*। सर्वशक्तियों की किरणों की शीतल फुहारें मन को असीम शीतलता प्रदान कर रही हैं। सर्वशक्तियों से स्वयं को भरपूर कर, अब मैं परमधाम से नीचे आ कर सूक्ष्म लोक में प्रवेश करती हूँ।

➳ _ ➳ अपने लाइट के फ़रिश्ता स्वरूप को धारण कर, बापदादा के साथ कम्बाइंड हो कर अब मैं फिर से उसी मायानगरी में आ जाती हूँ। और माया के जाल में फंसे अपने आत्मा भाइयों को छुड़ाने की सेवा में लग जाती हूँ। *बाबा की याद मेरे चारो और सेफ्टी का एक मजबूत किला बन कर अब मुझे माया के जाल में फंसने से बचाये रखती है*।

———————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अनेक प्रकार के भावों को समाप्त कर आत्मिक भाव को धारण करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सर्व के स्नेही आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा उमंग उत्साह के पंख सदा पास रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव सफलता सहज प्राप्त कर लेती हूँ ।*
✺ *मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. आजकल दुनिया वाले तो स्पष्ट कहते हैं कि आजकल सच्चे लोगों का चलना ही मुश्किल है, झूठ बोलना ही पड़ेगा। लेकिन कई समय पर, कई परिस्थितियों में ब्राह्मण आत्मायें भी मुख से नहीं बोलती लेकिन अन्दर समझती हैं कि कहाँ-कहाँ चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। उसको झूठ नहीं कहते लेकिन चतुराई कहते हैं। तो चतुराई क्या है? यह तो करना ही पड़ता

है! तो वह स्पष्ट बोलते हैं और ब्राह्मण रॉयल भाषा में बोलते हैं। फिर कहते हैं मेरा भाव नहीं था,न भावना थी न भाव था लेकिन करना ही पड़ता है, चलना ही पड़ता है। लेकिन ब्रह्मा बाप को देखा, साकार है ना, निराकार के लिए तो आप भी सोचते हो कि शिव बाप तो निराकार है, ऊपर मजे में बैठा है, नीचे आवे तो पता पड़े क्या है! लेकिन ब्रह्मा बाप तो साकार स्वरूप में आप सबके साथ ही रहे, स्टूडेन्ट भी रहे और सत्यता व पवित्रता के लिए कितनी आपोजीशन हुई तो चालाकी से चला! लोगों ने कितना राय दी कि आप सीधा ऐसे नहीं कहो कि पवित्र रहना ही है, यह कहो कि थोड़ा-थोड़ा रहो। लेकिन ब्रह्मा बाप घबराया? *सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की भी आवश्यकता है। सहन करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, हार माननी पड़ती है लेकिन वह हार नहीं है, उस समय के लिए हार लगती है लेकिन है सदा की विजय।*

➳ _ ➳ 2. *सत्यता के पीछे अगर सहन भी करना पड़ता तो वह सहन नहीं है भल बाहर से लगता है कि हम सहन कर रहे हैं लेकिन आपके खाते में वह सहन शक्ति के रूप में जमा होता है।*

➳ _ ➳ 3. बाहर से ऐसे समझेंगे कि हम बहुत अच्छे चलते हैं, हमको चलने की चतुराई आ गई है, लेकिन अगर अपना खाता देखेंगे तो जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो, एक दो को देखकर भी कॉपी करते हैं, यह ऐसे चलती है ना तो इसका नाम बहुत अच्छा हो गया है, यह बहुत आगे हो गई है और हम सच्चे चलते हैं ना तो हम पीछे के पीछे ही रह गये। लेकिन वह पीछे रहना नहीं है, वह आगे बढ़ना है। *बाप के आगे, आगे बढ़ते हो और दूसरों के आगे चाहे पीछे दिखाई भी दो लेकिन काम किससे है! बाप से या आत्माओं से? (बाप से) तो बाप के दिल में आगे बढ़ना अर्थात् सारे कल्प के प्रालब्ध में आगे बढ़ना। और *अगर यहाँ आगे बढ़ने में आत्माओं को कॉपी करते हो, तो उस समय के लिए आपका नाम होता है, शान मिलता है, भाषण करने वाली लिस्ट में आते हो, सेन्टर सम्भालने की लिस्ट में आते हो लेकिन सारे कल्प की प्रालब्ध नहीं बनती।* जिसको बापदादा कहते हैं मेहनत की, बीज डाला, वृक्ष बड़ा किया, फल भी निकला लेकिन कच्चा फल खा

गये, हमेशा के लिए प्रालब्ध का फल खत्म हो जाता है। तो अल्पकाल के शान, मान, नाम के लिए कॉपी नहीं करो। यहाँ नाम नहीं है लेकिन बाप के दिल में नम्बर आगे नाम है।

✺ *ड्रिल :- "सत्यता की शक्ति से बाप के दिल में नम्बर आगे लेने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा एकांत आत्मिक स्थिति में अमृतवेले समय खुली हवा में छत पर बैठी हूँ...* हल्के हल्के टिमटिमाते तारों से, चिड़ियों की चहचाहट से, फूलों की खुशबू से, घास पर ठंडी ठंडी ओस की बूंदों से मेरा तन, मन आनंद से भर रहा है... मैं आकाश की ओर देखकर बाबा को बुलाती हूँ... ब्रह्मा बाबा की भृकुटी में विराजमान शिव बाबा सूक्ष्मवतन से नीचे आ रहे है... मम्मा, दादी, दीदीयाँ सभी ब्राह्मण सफेद ड्रेस में नीचे आ रहे हैं...

➳ _ ➳ बाबा के आते ही चिड़ियाँ, फूल, घास सब चहकने लगते है... फूलों की खुशबू जो धीमी-धीमी थी, वह हज़ारों गुणा बढ़ गयी हैं... *बाबा, मम्मा, दादी, दीदीयाँ मुझ आत्मा में वर्षा रूपी किरणे भर रहे है...* किरणों से मैं एकदम हल्कापन महसूस कर रही हूँ... मुझ आत्मा से पाँचो विकार मानो खत्म हो रहे है...

➳ _ ➳ मुझ आत्मा में बाबा सत्यता की शक्ति को भर रहे हैं... *बाबा ने इतनी शक्तियाँ भर दी कि 63 जन्मों के झूठ बोलने का संस्कार एकदम नष्ट होते दिखाई दे रहे है... बाबा मुझे सच्चाई का वरदान दे रहे हैं...* बाबा शांति, पवित्रता, प्रेम, सुख, आनन्द, शक्ति और ज्ञान की किरणे भर रहे हैं... मुझ आत्मा में सागर से भी गहरी सत्यता की शक्ति बढ़ चुकी है... अब मैं आत्मा सच्ची-सच्ची ब्राह्मण आत्मा महसूस कर रही हूँ...

➳ _ ➳ मेरा मन आनंद से भर चुका है... मैं अतिइंद्रिय सुख का अनुभव कर रही हूँ... मैं आत्मा अब सूक्ष्म चेकिंग कर दिनचर्या को देखती हूँ कि कही

मैं झूठ का साथ तो नहीं दे रही हूँ... *मैं अलौकिक अनुभूतियों का अनुभव कर रही हूँ... मेरा मुख मेरा दास बन चुका है...* अब यह वही बोलता है जो मैं इसे आदेश देती हूँ... किसी भी अन्य आत्माओं के संस्कारों का प्रभाव मुझ पर नहीं पड़ रहा है...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा कभी भी झूठ नहीं बोलती... ऐसी चतुराई नहीं दिखाती हूँ... अन्य आत्माओं को देख कॉपी नहीं करती हूँ... *ब्रह्मा बाबा की तरह सच्चाई के रास्ते पर चलती हूँ... सत्यता की शक्ति मुझे मज़बूत बना रही है...* बाबा की मैं लाडली बच्ची बन चुकी हूँ... प्यारे-प्यारे बाबा के दिल में मेरा नंबर सबसे पहले है... नाम, मान, शान मिले या न मिलें इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ रहा हैं... मेरा जमा का खाता अब बढ़ रहा है...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔